ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 346-349

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

# राजेश जोशी का विद्रोही तेवर : नव वामपंथी कविताओं के आईने से

**वैजू के**
शोध अध्येता– हिन्दी विभाग कोच्चिन विश्वविद्यालय, कोच्चि (केरल), भारत

**Received- 21.07.2020, Revised- 25.07.2020, Accepted - 27.07.2020 E-mail: shyjukas@gmail.com**

***सारांश :*** ***राजेश जोशी अपनी कवि परंपरा से संवाद करते हुए अपने समय की बारीक समझ रखने वाले कवि हैं। उनकी कविता वहाँ से शुरू होती है जहाँ से सत्ता की आँख बंद हो जाती हैं। वे अंतिम आदमी के दुख–दर्द में शामिल ऐसे रचनाकार हैं जो सत्ता की क्रूरता और भयावहता से आतंकित नहीं होते उससे लड़ने का हर खतरा उठाते हैं। वे भीड़ में भी पहचान में आ जाने वाले कवि हैं। जब सब कोई चुप हो तब भी बोलने का दम भरने वाले और जनता के साथ खड़े रहने वाले रचनाकार हैं। अपने समय की हरेक प्रतिक्रियावादी ताकत की पहचान का वे रखने वाले सर्जक तो है ही उससे कैसे निपटना है इसकी योग्यता हासिल कर चुके कला विद भी हैं। मार्क्सवादी जीवन दर्शन में विश्वास उनकी कविताओं में साफ तौर पर अभिव्यक्त होता है। वे मानवीय गरिमा और प्राकृतिक सौंदर्य को बचाये रखने के आकांक्षी रचनाकार हैं। इसी लिए जब भी कोई इनपर चोट करता है तो उनका प्रतिरोधी तेवर अपने प्रबलतम रूप में व्यक्त होता है। जब भी मानवता का गला घोंटने की कोशिश की गई तो राजेश जोशी नेसमान रूप से प्रतिरोध दर्ज कराया है। हरेक जनांदोलन की सार्थकता को पहचान कर उसकी सफलता का उपक्रम उनके कवि व्यक्तित्व कापहला उद्देश्य है।***

***कुंजीभूत शब्द– रचनाकार, सत्ता, क्रूरता, भयावहता, आतंकित, प्रतिक्रियावादी, ताकत, योग्यता, हासिल,कला ।***

ऐसे भाव बोध पर खड़े राजेश जोशी अपनी सामाजिक–राजनैतिक संरचना के अंतर्विरोधों को अभिव्यक्त कर अपना युगधर्म निबाहने वाले कलाकार हैं । समकालीन समाज का विकृत रूप यदि देखना है तो राजेश जोशी की कविताओं से दो चार होने के अलावा और कहीं जाने की जरूरत नहीं पड़ेगा आपको। सत्तातंत्र की संपूर्ण जकड़बंदी राजेश जोशी के यहाँ अपनी समग्रता में व्यक्त मिलती है। समाज की इतनी सारी नकारात्मक छवियाँ हैं कि उनसे गुजरने वाला पाठक बेचौन हो जाता है। वह खुद को थका–हारा महसूस करने लगता है। उसका पराजय बोध उस पर हावी होने लगता है। यह सब कुछ घट रहा होता है तभी अचानक राजेश जोशी की कविता'बच्चा पाँव ले रहा है हमें याद आती है।

हर प्रतिगामी शक्ति से मुखालफत कर प्रगतिशील युग धर्म की वकालत करने वाले कवि राजेश जोशी ने जिद कविता संग्रह के प्रकाशन के साथ मुकम्मल तौर पर एक पीढ़ी की कविता यात्रा पूरी करली है। किसी भी रचनाकार की रचना धर्मिता के वर्णन विवेचन और मूल्यांकन की प्रक्रिया सतत चलती रहती है । वह अपने किए की सामाजिक स्वीकृति के साथ ही। मुक्ति बोध के शब्दों में इसे ही रचनाकार का आत्म–संघर्ष कहा जाना उचित है। राजेश जोशी के इस आत्म–संघर्ष के प्रक्रिया की चरम परिणति जहाँ दिखती है वह जिद है। जिद संग्रह का प्रकाशन कई दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है। यह संग्रह एकऐसे समय में आया है। जब प्रकाश पर अंधकार के वर्चस्व की विजय गाथा लिखने कीपूरी तैयारी के साथ व्यवस्था की जकड़बंदी पूरे समाज पर हावी है। बेहद प्रायोजित ढंग से एक ऐसा माहौल बनाया जारहा है जो पूरी तरह बाजार नियंत्रित और संचालित हो जहाँ साहित्य और कला जैसे मानवीय सरोकारों से जुड़े विषयों के लिए कोई स्थान सुरक्षित न हो। प्रतिरोध की सबसे कमजोर आवाज को भी पूरे दल बल के साथ कुचल कर एकाधिकार की व्यवस्थाकाय मकर तानाशाही फरमान जारी करने की तैयारी हो। ऐसे समय में कथ्य के स्तर पर सत्ता के हर रूप से टकराते हुए अपना स्पष्ट प्रतिरोध दर्ज करा कर बेहद सावधानी पूर्वक गढ़ी गई कविताओं के मजबूत संकलन का आना हमें अपने समय और समाज को देखने समझने का अवसर देता है और एक कवि की प्रतिबद्धता को मूल्यांकित करने का उचित समय भी मुहैया कराता है। जिद संग्रह एक कवि के संपूर्ण कलात्मकता की स्वाभाविक परिणति जैसा है। अपने तेवर में राजेश जोशी अपने शुरुआती कवि जीवन से ही सामाजिक–राजनैतिक संरचना के भीतर पल रही विभेदकारी और शोषण पर टिकी व्यवस्था की मुखालफत कर एक सामाजिक जीवन पद्धति विकसित करने का प्रयास करने वाले कवि रहे हैं । उनकी चिंताओं में व्यक्ति समाज और मानवीय मूल्य का फीमुखर हैं। राजेश जोशी सुकून

**अनुरूपी लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

देने वाले कवि नहीं है वे बेचौन करने वाले कवि हैं । यह बेचौनी उनके सामाजिक–राजनैतिक व्यवस्था से असंतोष के कारण है। मुक्ति बोधने अपनी एक कविता में कहा है जो है उससे बेहतर चाहिए । राजेश जोशी की लंबी कविता समर गाथा के पंक्तियां देखें– **स्वतंत्र होना है, होनाहै हमें, हम सबको, चिड़ियों की तरह स्वतंत्र होना है। जीना है, जीना है, हमें हम सबको, पेड़ों की तरह जीना है। गर्व से सिर उठाए, धूप, पानी, हवा और मिट्टी के साथ लहलहाते हुए, झूमते गाते हुए, हम दुनिया को फूलों और फलों से लाद देंगे।**[1]

जीवन के कविता की तरह होने से आशय शायद ऐसे जीवन के होने से होगा । लेकिन आलम यह है कि पूरी कायनात ही इस पूरे कवितापन की विरोधी होती चली जा रही है। भयंकर रूप से एक पागलपन का दौर चल रहा है और जो इस पागलपन में शामिल नहीं है वह जीने का अधिकारी भी नहीं है। ऐसी उद्घोषणा करने वाले समाज की वास्तविक सच्चाई व्यक्त करती है। मारे जाएँगे शीर्षक कविता । जहाँ समर गाथा शीर्षक कविता की इन पंक्तियों में कवि की इच्छा–आकांक्षा अभिव्यक्त हुई है वहीं मारे जाएँगे कविता भारतीय समाज का सच व्यक्त कर रही है। यह आकांक्षा और हकीकत का अर्थ दो समय का फर्क भी है। समर गाथा कविता एक ऐसे युवा कवि के सोच की कविता है जो व्यवस्था को अपने दम पर बदल डालने का स्वप्न पाले बैठा हुआ है। उसे अपने बाजुओं पर विश्वास है वह सत्ता की चालाकी और धूर्तता से पूरी तरह परिचित न होने के कारण शायद उनकी गोटियों को ठीक से न समझ पा रहा हो लेकिन जब वही कवि और ज्यादा मजबूती के साथ समाजिक संरचना की समझ विकसित कर लेता है तो उसे हकीकत का अंदाजा लग जाता है। इन्हीं सारे अंतर विरोधों को ध्यान में रखते हुए धूमिल ने कहा होगा हमारे यहाँ क्रांति किसी अबोध बच्चे के हाथों की जूजी है। यह अनायास नहीं है कि जहाँ समर गाथा कविता में कविना जिम हिकमत को कोट करते हुए प्रतिरोधी अंदाज में कहता है–

**वे हमें अपने गीत नहीं गाने देते रो बसन**
**वे चाहते हैं कि हम अपने गीत न गा सकें।**[2]

वहीं जिद तक आते–आते कवि व्यवस्था का प्रतिरोध करने के लिए उसी के हथियार को इस्तेमाल करने की काबिलियत हासिल कर कहता है–

**अँधेरे से जब बहुत सारे लोग डर जाते थे, और उसे अपनी नियति मान लेते थे, कुछ जिद्दी लोग हमेशा बच रहते थे समाज में, जो कहते थे अँधेरे समय में अँधेरे के बारे में गाना ही, रोशनी के बारे में गाना है।, वे अँधेरे समय में अँधेरे के गीत गाते थे, अँधेरे के लिए यही सबसे बड़ा खतरा था।**[3]

अँधेरे का यह गीत गा सकने की योग्यता उसी के पास है, जो अँधेरे की गति और नियति दोनों जानता हो। राजेश जोशी को वह योग्यता हासिल है। उनके पास व्यापक सामाजिक अनुभव तो है ही प्रत्येक घटना क्रम को देखने। समझने और अभिव्यक्त करने की सूक्ष्म अंतर दृष्टि भी है यह अंतर दृष्टि ही राजेश जोशी को अपने समकालीनों से अलग बनाती है और विशिष्ट भी। राजेश जोशी की नव वामपंथी कविताओं को उनके स्वाभाविक विकास रूप में देखने पर एक युवा कवि के प्रौढ़ और वरिष्ठ में बदलने तक की पूरी यात्रा दर्ज मिलती है। लंबी कविता समर गाथा और एक दिन बोलेंगे पेड़ या मिट्टी का चेहरा के कवि राजेश जोशी और नेपथ्य में हँसी। दो पंक्तियों के बीच चाँद की वर्तनी और जिद के कवि राजेश जोशी में जो अंतर आया है वह साफ दिखता है। अपनी नव वामपंथी कविताओं में जहाँ कवि का तेवर एक तरफ रोमानी किस्म का था तो दूसरी तरफ जो भीग लत है उसे अपने तरफ बदलकर रख देने का जज्बा मौजूद था। धीरे–धीरे करके यह दोनों तेवर खत्म होता गया और उसकी जगह लेती गई एक गहरी बेचौनी। राजेश जोशी के अंतिम तीन संग्रह और खास कर दो पंक्तियों के बीच और चाँद की वर्तनी संग्रह की कविताओं को पढ़ते हुए सामाजिक हलचलों से घबराए हुए एक ऐसे चरित्र का चेहरा बार–बार याद आता है जो एक शांति पूर्ण वातावरण की खोज में लगातार लगा हुआ है लेकिन उसे वह नसीब नहीं । ये जो शांति पूर्ण वातावरण की खोज है यह आधुनिक मानव मन की सबसे बड़ी समस्या है। विकास की अंधी दौड़ में आगे बढ़ रहे इंसान ने यह कभी सोचा ही नहीं कि एक ऐसी मंजिल भी आ सकती है जहाँ से कि सारे संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद सुकून के पल गायब हो जाएँगे। जब इनसान आधुनिक बनने की प्रक्रिया में नए–नए आविष्कारों को जन्म देर हाथा तो उसे यह कभी लगा ही नहीं कि हमारे साथ–साथ हमारी सहजीवी प्रकृति भी हमारे साथ है उसे असंतुलित करके हम जो भी अर्जित करेंगे वह क्षणिक सुख भले दे दे शाश्वत शांति नहीं दे सकता। विकास के दौड़ में खाँव खाँव करता इनसान सब कुछ निगल जाना चाहता था उसके रास्ते में नदी आई तो उसने उसे सुखा दिया जंगल आए काट डाला पहाड़ आए खोद कर फेंक दिया जहाँ हरे भरे पेड़ों की जरूरत थी वहाँ बड़ी–बड़ी चिमनियाँ लग गई मन में वैमनस्य पाल लिया मानवीयता का गला घोंट दिया। साहित्य संस्कृति से अपना नाता तोड़ लिया और तब उसने कहा कि मैंने विकास किया है। मैं आधुनिक हो गया हूँ। दो–दो विश्व युद्धों के करोड़ों नरसंहारों को अपनी विजय यात्रा बताने वाले क्रूर

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

मनुष्य के अवचेतन तक में सांप्रदायिकता और नस्लीय श्रेष्ठता का जहर भरा हुआ है लेकिन वह ऐंठकर चलता है और कहता है कि यह हमारी उपलब्धि है। जब वह इन उपलब्धियों का गिनाकर ठहाका लगा रहा हो तो कविता के भीतर सुकून के पल होंगे यह अकल्पनीय है। कलाएँ सामासिकता और सहजीविता की पक्षधर हुआ करती हैं। उन्हें इस तरह का एकांगी परिवर्तन प्रगतिशील कम प्रतिगामी ज्यादा लगता है। इसीलिए वे इसकी मुखालफत करती हैं। एक सजग सर्जक कला के मूल्यों के साथ उचित बर्ताव करते हुए अपना युग धर्म निर्मित करता है। राजेश जोशी जैसे सजग नव वाम पंथी कवि की कविताओं में यह युग धर्म बेहद मजबूती के साथ अभिव्यक्ति पाया है।

आधुनिक भारतीय मानव मन की निर्मिति में जिन पुरखे रचनाकारों से संवादी रिश्ता कायम कर एक बेहतर सामाजिक संरचना कावि का हो सकता था। वह हिंदी नव जागरण के दौर में ही अपनी तमाम प्रगतिशील भूमिका के बाद भीखंडित नजर आता है। कबीर और तुलसी जैसे पुरखे जिस सामाजिक एकता की वकालत कर रहे थे और आचार्य शुक्ल के हवाले से कहूँ तो कबीर जैसे संत डाँट–फटकार कर दोनों दीन के लोगों को एक साथ ला कर बिठा पाने में सफल भी हो गए थे । उसकी धारा को उन्हीं के वंश जोंने आगे चलकर अवरुद्ध कर दिया यह अवरोध कुछ इस तरह पैदा हुआ कि भारतीय इतिहास की महान कलंकित घटना देश विभाजन के रूप में उसकी परिणति हुई। दो विश्व युद्धों की भयंकर तबाही के साथ देश विभाजन का दर्द लिए राजेश जोशी की पीढ़ी जब साहित्य के क्षेत्र में आ रही थी तब तक भारत पाक युद्ध भारत चीन युद्ध नक्सलवादी आंदोलन और भाषा आंदोलन जैसी बड़ी घटनाएँ भारत के निकट अतीत में घट चुकी थी। यह बात रेखांकित करने की है कि कायदे से राजेश जोशी एक कवि के रूप में जे पी आंदोलन के साथ साहित्य के रंग मंच पर आते हैं। राजेश जोशी जैसा सजग सर्जक उस आंदोलन की चेतना से न प्रभावित हुआ हो ऐसा हो सकना काफी कठिन है। जे पी आंदोलन आपातकाल कांग्रेस का सत्ता से विमुख होना जनता दल की सरकार और फिर कांग्रेस की वापसी ये कुछ घटनाएँ इतने कम दिनों में घटित हुईं और इतनी प्रभावकारी साबित हुई कि इसका हम जैसे जिन्होंने उसे देखा नहीं सिर्फ अनुमान ही लगा सकते हैं।

भारत की सामाजिक राजनैतिक गतिविधियों के लिहाज से 70 से 80 का दशक जितना तीव्र हल चलों वाला दशक सिद्ध हुआ उतना बहुत कम बार होता है। 20वीं सदी का तो कोई और दशक या दन हीं आता और यह परिवर्तन एक रेखांकन सिद्ध हो रहा था। उस दौरान जो कुछ घटित हो रहा था वह अपना असर छोड़ रहा था। भारतीय राजनीति के लिहाज से जे पी आंदोलन एक तरफ विपक्ष का विकल्प तय करने वाला आंदोलन था तो दूसरी तरफ समाज के पिछड़े वर्ग को सत्ता की कुंजी सौंपने वाला भी साबित हो रहा था। आर्थिक सुधारों के लिहाज से यही वर्ष हरित क्रांति और श्वेत क्रांति के वर्ष भी हैं। दो विश्व युद्धों का मार खाया विश्व और विभाजन –विस्थापन सांप्रदायिक दंश और गरीबी का मार खाया भारत जहाँ एक युवा कवि के आधार में मौजूद था वहीं ये घटनाएँ जिनमें उसकी सीधी सीधी आवा–जाही थी उत्प्रेरक का कार्य कर रही थीं। इन्हीं सबों के बीच अपने समय को रचने की कोशिश करने वाला कवि जब अपने पीछे देखता था तो मुक्ति बोध इशारे से उसे संभावित खतरों से सजग कर रहे थे। नागार्जुन हाथ पकड़कर साथ चलने को कह रहे थे तो राज कमल चौधरी मुक्ति प्रसंग में अपनी बीमारी के बहाने देश की बीमारी का महाआख्यान लिख रहे थे। राजेश जोशी की लंबी नव वाम पंथी कविता समर गाथा को जब इन सभी हलचलों के बीच पढ़ा जाएगा तो उसके जूँ का वृत्तांत आसानी से समझ आएगा। समर गाथा नामक कविता के बारे में राजेश जोशी ने लिखा है कि इसकी प्रेरणा गोल्ड नफ्लीज की खोज नामक यूनानी कथा से मिली और यह एक नौसिखिए कवि का उत्साह और आवेग था। यह उत्साह और आवेग जितना एक नौसिखिए कवि का उत्साह और आवेग था उससे कई गुना ज्यादा एक युवा कवि की बेचौनी की परिणति थी। एक युवा का जो गुस्सैल नायकत्व हो सकता है वह इस कविता में व्याप्त है। चीजें किस तरह एक दूसरे से जुड़ी होकर ही अपना पूरा वितान रच सकने में सफल होती हैं यह देखने के लिए एक ही समय की कई विधाओं से एक साथ टकराना चाहिए। यह अनायास नहीं है कि भारतीय इतिहास का यह दशक युवाओं के गुस्से की अभिव्यक्ति का दशक भी है। कला के हर माध्यम में नायकत्व एक युवा गुस्सैल के हाथों में ही है चाहे वह कविता कहानी उपन्यास नाटक हो या सिनेमा हो या फिर पेंटिंग। लेकिन इसके बाद धीरे धीरे कांग्रेस के सत्ता में वापसी के साथ ही यह गुस्सा भीतर चला गया और राजेश जोशी की पीढ़ी ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए एक नई जमीन तलाश की। वह जमीन कैसी थी इसके बारे में खुद राजेश जोशी लिखते हैं कि दृमुझे लगता है कि आठवें दशक की कविता वस्तुतः हारिजेंटल एक्सिस की कविता है। उदात्तता गहराई ऊँचाईया जटिलता में धँसना जैसे पदों में उसे नहीं समझा जा सकता। उर्ध्व अक्षीय सोच के ये सारे पद अब निरस्त हो चुके हैं। आज की कविता में

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

गूढ़ार्थ नहीं निहितार्थ महत्वपूर्ण है। धूमिल के साथ–साथ कविता में नायकों की विदाई का अंतिम गीत गाया जा चुका है। यहाँ नायकों का प्रवेश निषिद्ध है। यह चरित्रों की कविता है। यह हमारे आस पास और दूर तक फैले जीवन प्रसंगों की कविता है। वह जीवन को उसकी विशिष्टता नहीं रही उसके विस्तार में रचना चाहती है यह एक सहज भावकी कविता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहीं कहा है कि सच्चे काव्य में सहज भाव प्रधान होता है। आरोपित नहीं। इसी अर्थ में वह एक सच्ची कविता है। इसमें सामान्य का विशिष्टीकरण या विशिष्ट के सामान्यीकरण की कोशिश नहीं है। वह सामान्य को सामान्य की तरह ही दिखाना चाहती है। उसी में आगे चलकर प्रवृत्तिगत विशेषताओं को उद्घाटित करते हुए उन्होंने लिखा है दृ आठवें दशक की कविता अपनी कला भाषा और अपने पूरे व्यवहार में अपने से पहले की संपूर्ण कविता की बनिस्बत सबसे अधिक जन तांत्रिक कविता है। राजेश जोशी का यह बयान और इसके साथ ही कविता का आठवाँ दशक शीर्षक लेख में अभिव्यक्त उनका विचार जितना ज्यादा 8वें दशक की कविता के लिए महत्वपूर्ण है उससे ज्यादा उनकी कविता को समझने के लिए।

राजेश जोशी की नव वाम पंथी कविताओं में व्यवस्था के विरोध के साथ–साथ बेहतर सामाजिक संरचना का स्वप्नभी मौजूद है। राजेश जोशी कई सारे बिंदुओं पर अपने समकालीनों में विशिष्ट इस अर्थ में भी हैं कि उनके यहाँ संग्रह और त्याग कावि वे अन्यों की अपेक्षा ज्यादा स्पष्टता के साथ रेखांकित किया जा सकता है। जब सब कुछ सत्ता की जकड़ में कैद होतो क्रांति की बात थोड़ी बे मानी लगती है। ऐसे में होता यह है कि कुछ तो पराजय बोधका शिकार होकर निराशा के गर्त में चले जाते हैं। कुछ जो अति उत्साही होते हैं। वे एक बेहद सामान्यी कृत ढंग का प्रोपगैंडा खड़ा करने का प्रयास कर अपने को क्रांतिकारी घोषित कर लेते हैं। ऐसे में राजेश जोशी जैसे नव वाम पंथी कवि प्रतिरोध की सबसे छोटी इकाई से भी क्रमिक परिवर्तन की आस लगाए अपना पक्ष स्पष्ट कर देते हैं वे लिखते हैं–

**कम बख्त एक नसने जरा सा ऐठ कर, हर मुमकिन को कर दिया, नामुमकिन!**

राजेश जोशी अपनी अंत र्वस्तु की विविधता को व्यक्त करने के लिए अपनी अभिव्यक्ति के अलग अलग रास्ते तलाशते हैं। उनके यहाँ जीवन के छोटे छोटे अनुभव काव्यानुभव के दायरे में आते हैं। वे जीवन के हर क्षण के भीतर कविता तलाश लेने वाले कवि हैं। कविता उनके लिए जीवन का परिष्कृत रूप मात्र है वे दिव्यता और भव्यता का गुण गान न करके सहजता और सरलता से बतकही करने वाले कवि हैं। पाठक को आहिस्ता आहिस्ता अपने पास बुलाते हैं। जब पाठक उनके एक दम करीब आ जाता है तो उससे धीरे से कविता के भीतर ही एकाधवाक्य ऐसा कह देते हैं कि वही उसके लिए पर्याप्त होता है। राजेश जोशी की कविता में गद्य की पर्याप्त आवा जाही के बाद भी कविता की बुनियादी विशेषता उसकी लय कहीं से भी खंडित नहीं होती। चाँद राजेश जोशी का इतना प्रिय बिंब है कि हर दूसरी कविता में उसकी उपस्थिति भिन्न हो जाता है और खास बात यह कि इसके जितने भी बिंब आए हैं उनमें एक गजब तरह का सम्मोहन दिखता है। यह सम्मोहन एक युवा मन के सम्मोहन जैसा लगता है और तब यह बात सच साबित होती है कि कवि मन सदैव युवा ही रहता है। राजेश जोशी के कवि व्यक्तित्व की बनक नव वाम पंथी कविता के एक संपूर्ण कवि की बनक है। एक ऐसा कवि जिसकी कविता में नाटकीयता है गेयता है संगीत है गद्य है और इन सब में गुँथा हुआ मानवीय जीवन का सच भी है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजेश जोशी समर गाथा पृ. 55.
2. वहीदृ पृ.60.
3. राजेश जोशी –जिद पृ 86.
4. राजेश जोशी –एक कवि की नोटबुक पृ. 90.
5. आचार्य राम चंद्र शुक्ल – चिंतामणि भाग–1 पृ.112.
6. आचार्य राम चंद्र शुक्ल – चिंतामणि भाग–1 पृ 118.
7. राजेश जोशी – जिद पृ. 90.
8. आचार्य राम चंद्र शुक्ल – चिंतामणि भाग–1 पृ. 20.
9. राजेश जोशी – जिद पृ. 95.

*****